P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-11* July- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजी सेठ कृत उपन्यास 'तत्सम' में अभिव्यक्त अन्तर्द्वन्द्व का विवेचन

Explanation of The Inner World Expressed In Raja Seth's Novel 'Tatasam'

Paper Submission: 10/07/2020, Date of Acceptance: 25/07/2020, Date of Publication: 30/07/2020

शशि बेसरवारिया
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
महाराजा गंगासिंह
विश्वविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान, भारत

शकुंतला देवी राणा
सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बड़सर, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश

राजी सेठ कृत 'तत्सम' उपन्यास में तीन पात्र हैं – वसुधा, विवेक और आनंद। तीनों ही अपनी–अपनी परिस्थितियों के कारण अन्तर्द्वन्द्व में रहते हैं। अन्तर्द्वन्द्व के कारण अपने–अपने हैं। वसुधा इनमें सबसे अधिक द्वन्द्वग्रस्त है। क्योंकि यह नारी है और समाज में नारी के लिए इतनी सुगमता नहीं है कि वह अपनी भावनाओं का प्रकाशन कर सके। भावनाओं को दबाने, स्वतन्त्रता न मिल सकने, रूढिगत समाज के दबावों के कारण नारी अधिक द्वन्द्वों का सामना करती है। 'तत्सम' उपन्यास यही तथ्य उद्घाटित करता है।

In the novel Raja Seth, there are three characters - Vasudha, Vivek and Anand. All three live in the inner world due to their own circumstances. The causes of the inner world are their own. Vasudha is the most conflicted among them. Because it is a woman and it is not so easy for a woman in the society to express her feelings. Women face more conflicts due to pressures of feelings, lack of freedom, pressures of conservative society. The 'Tatasam' novel reveals this fact.

मुख्य शब्द : अन्तर्द्वन्द्व, राजी सेठ, तत्सम, उपन्यास, नारी, समाज, पुरुष, मूल कारण, मानसिक रोग, अभिव्यक्ति, परिवार, परम्परा, आधुनिक मूल्य, स्वत्व, स्त्री विमर्श, इकाई, पितृसत्तात्मक।

Indradvandva, Raji Seth, Tatasam, Novel, Woman, Society, Men, Root Cause, Mental Disease, Manifestation, Family, Tradition, Modern Values, Self, Female Discourse, Unit, Patriarchal.

प्रस्तावना

साहित्य में स्त्री एक वर्ण्य विषय के रूप में सदा से ही रही है। नारी का स्वरूप हर काल के साथ बदलता रहा है। यह स्वरूप शिक्षा और सामाजिक मूल्यों के बदलाव के कारण परिवर्तित होता रहता है। अनेक परिवर्तनों के बाद भी भारतीय नारी परम्परा और आधुनिक मूल्यों के द्वन्द्व के संघात से गुजरती हुई, शुद्ध मानवीय स्तर एक व्यक्तित्व बनने के लिए बेचैन रहती है। इसकी सारी ऊर्जा परिवार रूपी संस्था को चलाने में व्यय हो जाती है। पति और बच्चे उसके जीवन की गाड़ी के लिए पहिए हैं। विवाह उसके लिए पटरी है। पर जब वह इस पटरी पर आती है तो सबसे रूढियों की उबड़ खाबड़ से सामना करना पड़ता है। इसकी ऊर्जा का ज्यादातर हिस्सा पितृसत्ता के बनाये नियमों के पालन में लग जाता है। जीवन की ढलान में आकर उसे लगता है कि उसे इस व्यवस्था को चलाए जाने के लिए उसे एक पुर्जे के तरह इस्तेमाल किया गया है। उसका अपना 'स्वत्व' कोई चीज नहीं है। यदि स्त्री अपने 'स्वत्व' के बारे में सोचने लगती है तो यही सोच आज 'स्त्री चिंतन' या 'स्त्री विमर्श' के नाम से प्रकाश में आ रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य राजी सेठ के उपन्यास 'तत्सम' का विश्लेषण कर यह जानना है कि पात्रों में किस प्रकार अन्तर्द्वन्द्व हो सकता है? खासकर नारी अन्तर्द्वन्द्व से घिरी रहती है। अन्तर्द्वन्द्व के कारणों की तलाश करना, अन्तर्द्वन्द्वों से होने वाले परिणामों की समीक्षा करना इस शोध का उद्देश्य है। नारी का अन्तर्द्वन्द्व समाज और परिवार को किस तरह से प्रभावित करता है, इसको जानना इस कार्य का उद्देश्य है।

शोध प्रविधि

इस शोध कार्य में साहित्य की वर्तमान दशाओं का विश्लेषण किया है। इसलिए लिखित सामग्री को आधार सामग्री के रूप में लिया है। यह द्वितीयक स्रोत है जिससे आंकड़े जुटाए गए हैं। इन सूचनाओं से आगमन–निगमन, सापेक्ष ज्ञान मीमांसा पद्धति का उपयोग कर अंतिम निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

साहित्यावलोकन

राजी सेठ 'लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार हैं। इन पर पाठकों, सम्पादकों एवं शोधार्थियों का ध्यान विशेष रूप से है। अब तक इन पर कई दृष्टियों से कार्य हो चुका है। राजी सेठ : कथा सृष्टि एवं दृष्टि – डॉ. कश्मीरी लाल (2006), राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन – रमेश दवे (2009), राजी सेठ का कथा साहित्य, सरोज शुक्ल (2012), उपन्यासकार राजी सेठ – प्रो. प्रमोद चौधरी, राजी सेठ का रचना संसार – डॉ. स्नेहजा सोनाले (2008), कथाकार राजी सेठ – डॉ. मिरगणे अनुराधा जनार्दन (2009) आदि पुस्तकें इन लेखिका पर आ चुकी हैं। इसके अलावा उपन्यासकार राजी सेठ (प्रमोद चौधरी), कथाकार राजी सेठ (अनुराधा जनार्दन), महिला कथाकार : समाज शास्त्रीय अध्ययन (कश्मीरी) आदि ने शोध कार्य भी किए हैं।

यह शोध आलेख राजी सेठ के उपन्यास 'तत्सम' के विशिष्ट पहलू अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण करेगा।

विषय विस्तार

परिवार हमारे समाज की आधारभूत इकाई है। इसमें नारी की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। पर वह तो पारिवारिक द्वन्द्वों में जीती हुई संघर्षरत रहती है। ''बाहर निकली स्त्री से परिवार के अन्दर अन्दर संघर्ष करती स्त्री, रास्ता निकालती स्त्री का निर्णय भी स्त्री विमर्श का महत्त्वपूर्ण सरोकार है, यह स्त्री टूटती नहीं, तनी हुई रस्सी पर चलने का रोमांच झेलती है।''[1]

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में नारी के विषय में जिस परिमाण और आयाम के साथ लिखा जा रहा है, वह स्त्री आंदोलन के लिए उल्लेखनीय है। ''आज स्त्री ने सदियों की खामोशी तोड़ी है। उसकी नियति में बदलाव है। उसके व्यक्तिगत जीवन का मिजाज बदल रहा है।''[2]

राजी सेठ समकालीन कथा साहित्य में एक विशिष्ट पहचान रखती हैं। उन्होंने स्त्री के भीतर पराजित पुरुष को बल्कि व्यवस्था को अनेक भंगिमाओं के साथ उकेर कर नये अर्थ समाज के सामने रखे हैं। वे साहित्य के क्षेत्र में नयी ताजगी और परिपक्वता भरा लेखन लेकर आयी हैं। उनके अनेक कहानी संग्रह और उपन्यास चर्चा में हैं। उनकी कथाएँ समय और समाज से न केवल प्रश्न करती हैं बल्कि उन प्रश्नों के समाधान भी ढूंढती हैं।

'तत्सम' उपन्यास नायिका वसुधा की कहानी कहता है। वसुधा उच्च मध्यमवर्गीय एक विधवा स्त्री है, जो स्वयं के लिए असुरक्षा की भावनाओं से घिरी जीवन बिता रही है। वह एक कॉलेज में प्रोफेसर है।

आज के समय में हर व्यक्ति किसी न किसी अन्तर्द्वन्द्व में जीता है। इस उपन्यास की यात्रा वसुधा इस अन्तर्द्वन्द्व में है कि पति के चले जाने के बाद उसका सहारा कौन बनेगा? वह दर्द भरे जीवन को जीने को ही अपनी नियति मानती है। ''विषाद से निराश वसुधा का मन यह मान लेने के लिए बाध्य हो जाता है कि अंधेरा ही सब है।''[3] वसुधा वर्तमान में कम अपने अतीत में अधिक जीती हुई दिखाई देती है।

इस उपन्यास का दूसरा पात्र है विवेक। विवेक भी वसुधा के साथ कॉलेज में प्रोफेसर है। वसुधा विवेक को जीवन साथी बना लेना चाहती है पर विवेक अपनी ही समस्याओं में आबद्ध है। विवेक की प्रेमिका शीरीन मर चुकी है और विवेक पछतावे में है। ''विवेक अपनी प्रेमिका शीरीन की याद में जी रहा है। उसकी मृत्यु के लिए खुद को जिम्मेदार मानता हुआ इस अपराध बोध से ग्रस्त प्रायश्चित के रूप में अपने सम्पूर्ण संकल्प लिए हुए हैं।''[4] यहां भी अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति है। विवेक अपने अन्तर्द्वन्द्व से निकलकर वसुधा से विवाह करने की मनःस्थिति में नहीं है। दोनों एक दूसरे का सहारा बन सकते हैं पर पास–पास रहते हुए चले गए हुओं को याद कर मन में मरते हैं – ''विवेक जब मृत प्रेमिका शीरीन को याद करते हुए कहता है– 'शी वाज ए पार्ट ऑफ मी' तो वसुधा भी मृत पति निखिल को याद करके सोचती है 'ही वाज ए पार्ट ऑफ हर।'[5]

यह द्वन्द्व सालता है, जलाता है, पीड़ित करता है। द्वन्द्व क्यों हो जाता है? इसका उत्तर है कि व्यक्तित्व के विशृंखलन अथवा समायोजन के अभाव के कारण होता है। इस अभाव से उत्पीड़न होने लगता है। इस सम्बन्ध में जैनेन्द्र जी कहते हैं– ''जिसका परिणाम तनाव हो, दो तत्त्व परस्पर इस तरह अनुबद्ध हो कि उनमें विग्रह और आकर्षण हों तो द्वन्द्व की अवस्था मानिए। द्वन्द्व से कोई प्राणी मुक्त नहीं। हर एक भीतर से विभक्त है, उसमें दो पल हैं, इच्छा इसके आगे जाती है।''[6]

उपन्यास का तीसरा पात्र है आनंद। आनंद भी अपनी पीड़ा लिए हुए हैं, वह निम्मी से प्रेम करता था पर अकारण संदेह के चलते निम्मी कहीं और विवाह करवा लेती है। आनंद को बड़ा आघात लगता है। वह मानसिक संताप से गुजरता है। आनंद का अन्तर्द्वन्द्व यह है कि वह निम्मी से अपना हृदय नहीं खोल सका।

तत्सम उपन्यास में नारी पात्र अधिकतर अन्तर्द्वन्द्व में जीते हैं। उनमें एक मानसिक द्वन्द्व निरन्तर चलता रहता है। डॉ. स्नेहजा लिखती हैं – ''विवेक एक सेल्फसेंटर्ड घोस्ट है, जो अभाव में तुष्टि खोजता है, शून्य में पूर्ण होना चाहता है। पलायनवादी विवेक अपनी अस्मिता एवं स्वतंत्रता से अनभिज्ञ असहज पात्र है, तो वसुधा दुराग्रहों से मुक्त पैरों के नीचे की धरती को चुपचाप अपने में पा लेने की खामोश ताकत।''[7]

वसुधा कई प्रकार से अन्तर्द्वन्द्वों से घिरी है। उसे लगता है कि वह अपने भाई–भाभी पर बोझ बन गई है। यह सोच कर उसके मन में गहरा दुःख छा जाता है। उसे कोई भी अपना नहीं लगता। हमदर्दी दिखाने वालों से डर लगता है। वह कहती है– ''अपने हितैशी। कैसे है अपने हितैशी? किस प्रकार की है चिंता। माथे पर सिंदूर की तरह ही पोंछ डालना चाहते हैं, निखिल के साथ जुड़े

जीवन खंड को। जैसे पैंसिल से लिखी गई थी वह सारी इबारत। रबर लिया और मिटा दिया गया। उन्हें क्या पता कितनी छोटी–छोटी बातों पर बाधा पड़ी है जिंदगी में।''[8]

'तत्सम' उपन्यास में हम पाते हैं कि पात्र अन्तर्द्वन्द्व से जूझते हैं। खासकर स्त्री पात्रों का अन्तर्द्वन्द्व अधिक व्यापक एवं घना है। स्त्रियाँ हर भावना को हृदय में दफन करके रखती हैं। वे शीघ्र फैंसला ले नहीं पाती। पितृसत्तात्मक समाज, स्त्री को दोयम दर्जे का माना जाना, स्त्री की स्वतंत्रता पर अंकुश होना आदि ऐसे कारण हैं जिससे स्त्री अभिव्यक्त–प्रकाशित नहीं हो पाती और अन्तर्द्वन्द्व में झूलती है। ''सब प्रकार के मानसिक रोगों का मूल कारण व्यक्ति में किसी न किसी प्रकार की मानसिक कमी पायी जाती है जिसे पूरी करने की निरन्तर चेष्टा करने पर भी व्यक्ति में हीन भावना बनी रहती है, जैसे किसी में आंगिक हीनता है तो उसकी पूर्ति मानसिक योजना द्वारा करता है। जब व्यक्ति पूर्णता लाने में असमर्थ हो जाता है तब उसमें हीनता का भाव आ जाता है।''[9]

'तत्सम' उपन्यास में अपने लिए जमीन ढूँढती नारी, अस्मिता तलाश करती नारी एवं अन्तर्द्वन्द्वों से जूझती नारी का चित्रण मिलता है। नारी के अन्तर्द्वन्द्व को प्रकट करने में यह उपन्यास बहुत हद तक सफल हुआ है। ''तत्सम उपन्यास नारी जीवन में मानसिक ऊहापोह की सम्पूर्ण झांकी है। इसका कथा क्षेत्र नारी अस्तित्व के प्रश्न से शुरू होकर उसके आन्तरिक झंझावातों से गुजरता हुआ समाज को संस्कार समेत हदों में बांधता–छोड़ता, अंततः एक निर्णय से लगने वाले बिन्दु तक पहुँचने की जबरदस्त कहानी है।''[10]

निष्कर्ष

कह सकते हैं कि राजी सेठ का उपन्यास 'तत्सम' अपने पात्रों के बीच एवं विशेषकर नारी के अन्तर्द्वन्द्व को चित्रित करने में सफल रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *सत्यदेव त्रिपाठी – हिन्दी उपन्यास समकालीन विमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2009, पृष्ठ–16*
2. *प्रभा खेतान – उपनिवेश में स्त्री, हिन्दी बुक सेंटर, दिल्ली, 2006 ई., पृष्ठ–234*
3. *राजी सेठ – तत्सम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983 ई., पृष्ठ–51*
4. *डॉ. स्नेहजा सोनाले – राजी सेठ का रचना संसार, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2008 ई., पृष्ठ–188*
5. *डॉ. एम. व्यंकेटश्वर – हिन्दी के समकालीन उपन्यासकार, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2002 ई., पृष्ठ–279*
6. *जैनेन्द्र – समय और हम, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, 1962 ई., पृष्ठ–727*
7. *डॉ. स्नेहजा सोनाले – राजी सेठ का रचना संसार, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2008 ई., पृष्ठ–194*
8. *राजी सेठ – तत्सम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983 ई., पृष्ठ–231*
9. *डॉ. स्नेहजा सोनाले – राजी सेठ का रचना संसार, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2008 ई., पृष्ठ–190*
10. *वही, पृष्ठ–181*